Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2023

भारतीय इतिहास दृष्टि और साहित्येतिहास : एक अध्ययन

अरविंद सुलानिया [1] | डॉ. गोपीराम शर्मा [2]

[1] सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान 335001

[2] सह आचार्य, हिंदी विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान 335001

ABSTRACT:

पृथ्वी पर मानव जीवन लाखों वर्ष पूर्व अस्तित्व में आ गया। मानवीय क्रियाकलापों का एक लंबा अतीत है। किन्तु हम इस सारी यात्रा को इतिहास के रूप में परिभाषित नहीं कर सकते। इतिहास तिथिक्रम के अनुसार विवरण को कहते हैं। इसके अनुसार जबसे लिखित अभिलेख प्राप्त होते हैं तबसे इतिहास का प्रारंभ माना जा सकता है। इस प्रकार इतिहास लगभग 5000 वर्ष पूर्व से ही प्रारंभ होता है। इतिहास लेखन में भारतीय दृष्टि के बारे में मान्यता रही है कि भारतीयों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का प्रायः अभाव रहा है। यहां लोग के इहलोक बजाय परलोक में अधिक विश्वास करते रहे हैं, ऐसा लोग मानते हैं। ये मान्यताएं भारतीय इतिहास कारों के लिए पूर्णतया सच नहीं हैं। भारतीय लोग वर्तमान जीवन से कभी सर्वथा विमुख नहीं रहे। वे वर्तमान और संसार को आनंद और भोग की वस्तु मानते रहे हैं। जहां तक राजनीतिक इतिहास लेखन की बात है, भारतीय इतिहास के रूप में विचार और आदर्श को उत्तराधिकार के रूप में आगे बढ़ाते आए हैं। भारतीय समाज इन्हीं बातों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना चाहता था। क्योंकि इन्हीं बातों को वह मूल्यवान मानता रहा है। इसके विपरीत यूनानी और चीनी समाज 'राज्य' को महत्त्वपूर्ण मानता रहा, इसलिए उन्होंने उसको सुरक्षित करने का लेखन किया।

साहित्येतिहास लेखन इतिहास लेखन से कुछ भिन्न होता है। यह लेखन पांडुलिपियों, पुस्तकों और शोधकार्यों पर निर्भर होता है। साहित्येतिहास लेखन जनता की चित्तवृत्तियों का मूल्यांकन करता है और युग विशेष को सामने लाता है। साहित्य इतिहास को जानने के लिए अनेक सिद्धांत और प्रणालियों विकसित हुई हैं। इनके द्वारा साहित्य इतिहास का लेखन किया जा सकता है। इतिहास लेखन में प्रणालियां और वाद सहायक के रूप में है युग और जनता की चित्तवृत्तियां महत्त्वपूर्ण।

KEYWORDS:

साहित्येतिहास, भारतीय इतिहास लेखन दृष्टि, परिभाषित, प्रामाणिक तथ्य, अंतर्दृष्टि, तिथि क्रम, विवरण, आत्मोत्कर्ष, युगचेतना, ग्रंथकार, चित् वृत्तियां, चक्रीय सिद्धांत, रैखिक, विधेयवाद, सामग्री संकलन, प्रस्तुतीकरण, ऐतिहासिक भौतिकवाद, आधुनिक पद्धतियां, घटनाएं, चरैवेति चरैवेति, उद्घोषित, निरंतरता, मूल्यवान ।

इतिहास शब्द मानव जाति के अतीत को बताता है। आदिकालीन मानव तो पृथ्वी पर लगभग 30 लाख वर्ष पूर्व भी आ गया था परंतु इतिहास का संबंध तो केवल 5 हजार वर्ष से पूर्व से लिया जाता है। इतिहास वास्तव में 'अतीत के अभिलेख' के रूप में परिभाषित एक प्रत्यय है। अभिलेखीय इतिहास लिखित सामग्री के उपरांत ही संभव हो पाता है, अतः इतिहास को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं कि अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं का तिथि क्रमानुसार विवरण इतिहास है।

ई. एच. कार अपने इतिहास को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''इतिहास मानव अतीत के उसे बिंदु के प्रारंभ काल का अभिलेख है जब से लिखित अभिलेख प्राप्त होता है। इतिहास मानवीय सभ्यता का अभिलेख है।''[1]

इसी प्रकार अरबी साहित्यकार इब्न खल्दून के अनुसार- ''इतिहास मानव समाज, विश्व संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, युद्ध, क्रांति तथा राजनीतिक विप्लव के फलस्वरूप राष्ट्रों के उत्थान पतन का वृतांत है।"

इतिहास में जिन घटनाओं का संकलन होता है, वे महत्वपूर्ण होती हैं । इतिहास अनुभवों से प्रेरणा और अंतर्दृष्टि देने का कार्य करता है। अतः इतिहास में शामिल होने वाले तथ्य और घटनाएं देश और काल को प्रभावित करने वाले होते हैं।

इतिहासकार झारखंड चौबे कहते हैं- ''इतिहास का उद्देश्य अतीत के उदाहरण द्वारा ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जो मनुष्य की इच्छाओं और कार्यों का मार्गदर्शन कर सके।"[2]

इस प्रकार इतिहास में तथ्य अत्यंत उपयोगी होते हैं। डॉ. एच सी पांचाल कहते हैं- ''यह सच है कि इतिहास तथ्यों को महत्त्व देता है लेकिन तथ्य स्वयं नहीं बोलते। वे तभी कुछ कहते हैं जबकि उनका चयन प्रबंध एवं व्याख्या की जाती है। ऐसी स्थिति में तथ्य नहीं वरन् अनुभव महत्त्वपूर्ण बन जाता है। तथ्यों को अंतर्दृष्टि के साथ गुण, स्वभाव एवं जीवन के अर्थ से जोड़ा जाता है।"[3]

बहुत से विद्वान यह मानते रहे हैं कि प्राचीन भारतवासियों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का अभाव था। इनका मानना था कि भारतीयों में घटनाओं में विवरण तिथिक्रम के सही निर्वाह के प्रति उदासीनता और तथ्यों को कल्पित पौराणिक कथाओं के परिवेश में रखने की मान्यता रही है। परंतु ये विचार भारतीय इतिहासकारों के संदर्भ में पूर्णतया सत्य नहीं हैं। भारतीय विचार में वर्तमान जीवन को कभी सर्वथा नगण्य नहीं माना गया है। 'इह चैव वेदिध' अर्थात सत्य को यहीं जानना और इसी जीवन में ही धर्म का आचरण करना है। ऐसे सिद्धांतों के साथ चलता भारतीय मानस् 'चरैवेति चरैवेति' की वाणी को उद्घोषित करता आया है।[4]

जिस प्रकार का इतिहास आज परिभाषित होता है, वैसा भारतीयों ने नहीं लिखा, यह यह भी सत्य है। भारतीयों ने इतिहास के रूप में विचार और आदर्श को उत्तराधिकार में आगे किया, न कि ऐतिहासिक विवरणों की निरंतरता।

गोविन्दचंद्र पांडे का मानना है कि ''ऐतिहासिक प्रक्रिया का वास्तविक अर्थ सभी सांस्कृतिक प्रकरणों को अर्थ के एक विकासशील संदर्भ के प्रकरण के रूप में प्रतिष्ठित होने अथवा दूसरे शब्दों में आत्मबोध की गवेषणा के रूप में लिए जाने में निहित है।"[5]

कोई व्यक्ति या समाज उन्हीं बातों या घटनाओं को स्मृति में रखने या सुरक्षित रखने का यत्न करता है जिन्हें वह मूल्यवान या महत्त्वपूर्ण मानता है। प्राचीन काल में यूनानी और चीनी समाज 'राज्य' को बहुत महत्त्वपूर्ण और सर्वोपरि मानता रहा, इसलिए उनकी स्मृतियां ही उन्होंने सुरक्षित कीं। भारत में अर्थ या भौतिकता को कभी महत्त्व नहीं दिया गया। ऐहिक सुखों की कामना भी नहीं रही। इसलिए आत्मोत्कर्ष करने के उद्देश्य से लिखा आध्यात्मिक और धार्मिक साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है।

'साहित्येतिहास' इतिहास कि वह शाखा है जिसमें युग चेतना और साहित्य चेतना का अनिवार्य योग होता है। साहित्येतिहास का शाब्दिक अर्थ है साहित्य का इतिहास। यह वह विधा है जिसके अंतर्गत ऐसा इतिहास लिखा जाता है जिसमें विषय केवल साहित्य ही होता है। रेने वेलेक साहित्य के इतिहास की संभावनाओं पर प्रश्न उठाते हुए कहते हैं कि क्या ऐसा इतिहास लिखा जा सकता है जो इतिहास होते हुए भी केवल साहित्य का ही इतिहास हो और साहित्य की अनुभूतियों के ऐतिहासिक मूल्य की रक्षा हो सके।[6]

साहित्येतिहास शब्द का सबसे पहले प्रयोग वॉल्तेयर ने 18वीं शताब्दी में किया। इसके बाद हीगेल सहित अन्य विद्वानों ने इस शब्द को अपनाया। साहित्य में तत्कालीन समाज का चित्रण मिलता है। उस काल के मानवीय समाज की प्रस्तुतियों का लेखा-जोखा

साहित्येतिहास ही सामने लाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं- ''साहित्य का इतिहास पुस्तकों, उनके लेखकों और कवियों के उद्भव और विकास की कहानी नहीं है। वह वस्तुतः आदिकालीन प्रवाह में निरंतर प्रवाहमान जीवित मानव समाज की ही विकास कथा है।"[7]

इसी प्रकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल इस संदर्भ में लिखते हैं- ''आदि से अंत तक इन्हीं चित् वृत्तियां की परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।"[8]

साहित्य इतिहास में ग्रंथ, ग्रंथकार, आचार्य, मनुष्य जीवन, चित् वृत्तियां, मानवीय क्रियाकलाप आदि सब का वर्णन होता है परंतु प्रश्न है कि इनमें कौन सा तत्व है जो मुख्य है? इस विषय में आचार्य ने अलग-अलग ढंग से विचार प्रस्तुत किए हैं। साहित्य इतिहास में जनता की चित् वृत्तियों का मूल्यांकन होता है। युग विशेष की कृतियों का अध्ययन प्रस्तुत होता है। साहित्य के विकास की तार्किक व्याख्या सामने लाई जाती है।

साहित्येतिहास लेखन इतिहास के लेखन जैसा नहीं है। इसमें साहित्यिक रचनाओं, पांडुलिपियों एवं पूर्व में हुए शोध कार्यों को देखते हुए आगे बढ़ना होता है। यहां प्रमाणिक सामग्री का संकलन प्राथमिक शर्त होती है और उसकी व्याख्या या विश्लेषण दूसरी।

सुमन राजे का मत है- ''साहित्य इतिहास लेखन की प्रक्रिया के प्रमुख सोपान इस प्रकार है, सामग्री संकलन संबंधी प्रक्रिया, प्रामाणिकता निर्धारण संबंधी प्रक्रिया, संबंध निर्धारण संबंधित प्रक्रिया, प्रस्तुतीकरण संबंधी प्रक्रिया।"[9]

साहित्य इतिहास लेखन में सामग्री का संकलन कर सबसे पहले अप्रासंगिक और अप्रामाणिक सामग्री को छोड़ दिया जाता है। प्रामाणिकता के निर्धारण हेतु ग्रंथ के कागज-स्याही आदि का बाह्य परीक्षण कर विषय वस्तु, कथानक, भाषा शैली घटनाएं, इतिहास आदि आंतरिक परीक्षण कर कर लिया जाता है। सामग्री के ठीक प्रकार से परीक्षण के पश्चात उसका कालक्रम, युग, विधा और प्रवृत्तियों के अनुसार उसका वर्गीकरण किया जाता है। वर्गीकरण के किसी आधार को स्वीकार करते हुए उसके अनुसार साहित्यिक सामग्रिका व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुतीकरण कर दिया जाता है। डॉ. नगेंद्र मानते हैं कि ''साहित्यिक इतिहास में हम प्राकृतिक घटनाओं और क्रियाकलापों के स्थान पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से करते हैं। साहित्यिक रचनाएं भी मानवीय क्रियाकलापों का ही दर्शन करवाती है।"[10]

साहित्य इतिहास का लेखन या प्रस्तुतीकरण बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है इसमें विवरण को विश्लेषणात्मक ढंग से एवं औचित्यपूर्ण तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है। इस कार्य को वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक बनाने के लिए लेखक कई सिद्धांतों, दृष्टियों, विविध अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। चक्रीय सिद्धांत, रैखिक सिद्धांत, विधेयवाद, विकासवाद, द्वंदात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद आदि इतिहास लेखन के कई सिद्धांत हैं । इसी प्रकार साहित्य लेखन की कई प्रणालियों और विधियां हैं - वर्णनुक्रमी, कालनुक्रमी, वैज्ञानिक पद्धति, विधेयवादी पद्धति, नारीवादी पद्धति, समाजशास्त्रीय पद्धति। इनमें से किसी को आधार बनाकर साहित्य इतिहास का लेखन किया जा सकता है।

Conclusions

कह सकते है कि साहित्य इतिहास लेखन इतिहास लेखन से बहुत कुछ भिन्न है और उसके लिए बहुत सी पद्धतियां और प्रणालियों हैं। साहित्य इतिहास लेखन बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसके द्वारा हम साहित्य के साथ तत्कालीन समाज जीवन को ठीक तरह से समझ सकते हैं। किसी भी प्रणाली को आवश्यकतानुसार अपनाया जाना चाहिए परंतु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे साहित्य पर हावी न होने पाए। कई बार पद्धतियों या वाद को पहले या सामने रखकर ही मूल्यांकन शुरू करते हैं, जो किसी भी प्रकार से उचित नहीं होता। इसलिए इतिहास लेखक को साहित्य के इतिहास लेखन में एक अधिक पद्धतियों का प्रयोग युग सापेक्ष और आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

REFERENCES

1. ई. एच. कार - इतिहास क्या है, मेक मिलन कंपनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, 1976, पृष्ठ 21
2. झारखंड चौबे - इतिहास दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1984, पृष्ठ 10
3. डॉ. एच. सी. पांचाल - इतिहास के सिद्धांत और पद्धतियां, पृष्ठ 08
4. ब्रह्म पुराण, 27.02
5. जी.सी. पांडे - ए द मीनिंग एण्ड प्रोसेस ऑफ़ कल्चर, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, 1972, पृष्ठ 20
6. रेने वेलेक, उद्धृत भोला शंकर व्यास - साहित्य का इतिहास लेखन : समस्या समाधान, पृष्ठ 02
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी - हिंदी साहित्य, अतरचंद कपूर, दिल्ली, 1955, पृष्ठ 05
8. आचार्य रामचंद्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, संवत 2025, पृष्ठ 03
9. सुमन राजे -साहित्येतिहास संरचना और स्वरूप, ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर, 1975 पृष्ठ 220
10. डॉ नगेंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1973,पृष्ठ 04